2017

HINDI

(Major)

Paper : 5.3

(Hindi ka Natak Sahitya)

Full Marks : 60

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×7=7

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अनूदित और मौलिक मिलाकर कुल कितने नाटकों की रचना कीं?

(ख) 'राज्यश्री' नाट्य-कृति के रचयिता कौन हैं?

(ग) हरिकृष्ण 'प्रेमी' द्वारा लिखित दो नाटकों के नाम लिखिए।

(घ) 'मुक्ति का रहस्य' के नाटककार का नाम लिखिए।

(ङ) 'अजातशत्रु' नाटक की रचना कब की गई?

(च) मोहन राकेश द्वारा लिखित नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' को छोड़कर किसी अन्य एक नाट्य-कृति का नामोल्लेख कीजिए।

(छ) 'रक्त कमल' के नाटककार कौन हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर लिखिए : 2×4=8

(क) भारतेन्दुकालीन किन्हीं दो नाटककारों के नाम लिखिए।

(ख) ''मुझे सब अच्छा लगता है... और मैं घर में अकेली कब होती हूँ। तुम्हारे यहाँ रहते मैं यहाँ अकेली नहीं होती?'' प्रस्तुत कथन किसने, किससे और क्यों कहा?

(ग) ''नील-कमल की तरह कोमल और आर्द्र, वायु की तरह हल्का और स्वप्न की तरह चित्रमय! मैं चाहती थी उसे अपने अंक में भर लूँ और आँखें मूँद लूँ।'' संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

(घ) ''करुणामूर्ति! हिंसा से रँगी हुई वसुन्धरा आपके चरणों के स्पर्श से अवश्य ही स्वच्छ हो जाएगी। उसकी कलंक-कालिमा धुल जाएगी।'' यह कथन कौन, किससे और क्यों कह रहा है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के संक्षेप में उत्तर दीजिए : 5×3=15

(क) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में राजपुरुष दंतुल की भूमिका के बारे में बताइए।

(ख) हिन्दी नाट्य साहित्य को हरिकृष्ण 'प्रेमी' की क्या देन है?

(ग) लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों की विशेषताओं का आकलन कीजिए।

(घ) 'बिम्बसार' का संक्षिप्त चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ङ) जयशंकर प्रसाद के नाटकों में आधुनिकता की झलक पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

4. ''प्रसाद के नारी-पात्र पुरुष-पात्रों की तुलना में अधिक सक्रिय, महिमामय और प्रभावशाली हैं।'' सतर्क पुष्टि कीजिए। 10

अथवा

संवाद-योजना की दृष्टि से 'अजातशत्रु' नाटक की समीक्षा कीजिए।

5. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक का नायक कौन है और क्यों? सतर्क उत्तर दीजिए। 10

अथवा

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के नामकरण की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

6. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिए वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है...।

अथवा

राजन्! शुद्ध बुद्धि तो सदैव निर्लिप्त रहती है। केवल साक्षी रूप में वह सब दृश्य देखती है। तब भी इन सांसारिक झगड़ों में उसका उद्देश्य होता है कि न्याय का पक्ष विजयी हो—यही न्याय का समर्थन है।

★ ★ ★